नामांक Roll No.

No. of Questions — 14

No. of Printed Pages — 7

SS—26–Raj. Sah.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2014
SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2014

राजस्थानी साहित्य
(RAJASTHANI SAHITYA)

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों सारू सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सबसूं पैली आपरै प्रस्न पत्र माथै नामांक जरूर लिखे ।

(2) **सगला** सवाल करना जरूरी है ।

(3) हरेक सवाल रौ पड़ूत्तर उत्तर पुस्तिका में ईज लिखणो है ।

(4) र्जिण सवाल रा अेक सूं अधिक भाग है तो वां सगळा रा उत्तर अेक साथै लगातार लिखौ ।

(5) लेखन मांय सुद्धता अर वैज्ञानिक विवेचन करियां ज्यादा अंक दिरीजैला ।

(6) वर्तनी, व्याकरण अर सुलेख रौ विसेस ध्यान राखौ अर ओपतौ पड़ूत्तर देवौ ।

(7) उत्तर राजस्थानी भासा में ईज देवणा है ।

(8) पूर्णांक अर प्रस्नांक ठावी ढौड़ अंकित है ।

1. नीचै लिख्या गद्यावतरणां री सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) स्वामी जी रौ माथो अेक्दम घूमग्यो, बै अेक ही बात कैवता फिरै म्हारी संस्था बिगड़गी । म्हूं आदमी बणाणै सारू आ साधना करी, अठै तो हैवान त्यार हो़वण लागग्या अर बै आपरी कुटिया सूं निकळग्या, संस्था सूं निकळ्या । बीं नगर सूं निकळग्या, गाड़ी में बैठग्या, चालता रह्या । वारै मन में शांति कोनी, चैन कोनी, शांति ढूंढता फिरै, गांव गांव, नगर-नगर ।

अथवा

म्हारां बाबूजी पैलांई करजा में कळीज रहया है नै हमै फेर अै उणां नै पूरा ई डुबावणी चा । वै सो अै काम सगा-गनायतां रा नही । अै तौ दुस्मणां जैड़ा काम है इण रै वास्तै म्है जीवती माखी नहीं गिटूंला अर म्हनै चाहै जिता दुख देखणा पड़ै, पण म्है यां लोगां रै पानै नीं पडूला । ओ ब्या' व म्है रद्द करूं हूं । 4

(ख) दिवलो चसै, उजास करै । सही: पण कुणनै सरावां ? दिवलो स्नेह रै पाण बळै, पण स्नेह परायो । घाणी में तो विचारा तिल पिसै, स्नेह रस रो दान करै । बाती भी रूअड़ री । तो पराई कुरबाणी रै पाण जो जस रो चानणो होवै़ उण में काळूंस लागणी ही चाहीजै । त्याग में कपट रौ कळांस सदा ही लागै । तो कपट रो ही नाम है माया।

अथवा

रामू-नै छाती लगायां रामजस खाटली में पड़यो-पड़यो आपरी जिंदगानी री पोथी रा लारला पाना उथलै, नींद भी मुंढ़ा देख-देख टीका काढ़ै । भागी लोगां नै बिना लोरी नींद आवै । अै तो भागियां री रातां है जकी पसवाड़ा फेरतां-फेरतां काटणी ओखी हुज्याय । रामजस नींद रा भोत-नौरा काढ्या । बाकी नींद तो दूर, आंख्या सळ ही को पड़ै नीं । 4

(ग) आपां नै अठै निकी सुख-सांती दीखै है, चोखा-चोखा मन में मोवणिया चित्राम दीखै है, बे सगळा तो कोरा चिलकारा है । छिन में अदीठ होवण आळा है । हियै री आंखड़ल्या सूं जोवो थांनै रिंद रोही-रिंद रोही दीखैली । इण सुख मांय कोरो दुख है । आणंद मांय पीड़ा है । आ पीड़ा कदेई कोनी मरै, अजर है, अमर है ।

अथवा

फेर बे जीवण अर जगत रौ जाणै मरम जाण लियौ । सैंग विरथा है । पाप-पुन्न, चोखो-कोजो, काळो-धोळो सैंग बिरथा । अेक फालतू पणै रौ पड़दो सगळा रै आगे है । जीवण रै चरम सार रूप में मिळै है अेक पीड़ । अणंत पीड़ । ..... रंग-रगीली, रूपाली, फूताळी पीड़ । पीड़ावां रो ई समन्दर है ओ जीवण । 4

2. कहाणी रा तत्वां रै आधार माथै 'सूरज री मौत' कहाणी री समीक्षा करौ । 4

3. मुहणोत नैणसी रौ चरित्र-चित्रण करौ । 4

4. देश बदळया सूं कांई आदमी रौ मन बदळ जावै ? जातरा संस्मरण सूं उदाहरण देय'र खुलासौ करो । 4

5. 'हूं गोरी किण पीव री' उपन्यास मांय किण-किण सामाजिक समस्यावां ने उजागर कीवी है ? स्पष्ट करो । 4

6. आधुनिक राजस्थानी काव्य में प्रगतिशील काव्यधारा रौ परिचय दिरावौ । 6

7. नीचै लिख्यां विसयां मांय सूं किणी अेक विषय माथै राजस्थानी भासा में निबन्ध लिखौ : 6

(i) राजस्थानी लोक-गीत

(ii) बेरोजगारी अर निराकरण रा उपाय

(iii) रंगीलो तिंवार-होळी

(iv) पेहलो सुख निरोगी काया ।

8. नीचे लिख्यां पद्यासां री सप्रसंग व्याख्या करो :

(अ) प्रभू मोकूँ एक बेर दरसन दइये ।

तुम कारन मैं भइ रे दिवानी, उपहास जगत की सहिये ॥

हाथ लकुटिया कांधे कमळिया, मुख पर मुरली बजैये ॥

हीरा मानिक गरथ भंडारा, माल मुलक नहिं चहिये ॥

गवरी के ठाकर सुख के सागर, मेरे उर अन्तर रहिये ॥ 5

अथवा

हिम्मत कीमत होय, बिन हिम्मत कीमत नहीं ।

करे न आदर कोय, रद कागद ज्यूं राजिया ॥

कारज सरै न कोय, बल-प्राक्रम-हिम्मत बिना ।

हलकार्यां की होय, रंग्या स्याळ्या राजिया ॥

(ब) आ परदेसण पांवणीजी, पुळ देखै नी वेळा

आलीजा रा आंगणै में करै मनां रा मेळा

झिरमिर गीत सुणाती भोळै मनड़ै नै भरमाती

छळती आवै बिरखा बीनणी । 5

अथवा

थें करी असांयत आसरा ।

थिर सांयत थापवा सारू,

थारी बाढ़ाळी खळकाया –

रगत–वाळा,

क्रूरूण आंखियां ढळता –

अरूण–आंसू ढ़ाबवा सारू ॥

9. वीर सतसई रा पठित छंदा रै आधार माथै वीर–नारी रै मनगत–भावां रो बखाण करो । 5

10. 'सपनो आयो' कविता रै माध्यम सूं कवि लोगा ने कोई संदेश दियौ है ? 5

11. 'कतनी बार मंरू' कविता रो मूल भाव आपरा सबदां में लिखो । 5

12. काव्य री परिभाषा देवतां उठा रै भेदां रौ खुलासो करौ । 5

13. कुंडळिया छन्द रौ उदाहरण सागै परिचय दिरावौ । 5

14. उपमा अलंकार री परिभाषा उदाहरण सागै समझावौ । 5